यदि पूरे देश में व्यक्ति स्वयं को परिवार तक सीमित कर लेता है तो कोराना वायरस मौजूद होने पर एक घर के अंदर सीमित हो जाएगा, इससे इस वायरस के प्रजनन दर में भारी गिरावट होगी।

प्रकृति से छेड़छाड़ का ही नतीजा है यह महामारी

मोनिका चौधरी
अर्थशास्त्री,
इंस्टीट्यूट ऑफ
हेल्थ मैनेजमेंट
एंड रिसर्च,
जयपुर में
अध्यापन

जब जानवर बाजारों में भेजे जाते हैं तो आशंका रहती है कि उनके शरीर के कुछ वायरस अन्य जानवरों या मनुष्यों में फैलेंगे। इसी से अतीत में स्वाइन फ्लू, बर्ड फ्लू और कई अन्य बीमारियां हुई हैं।

प्राणीविदों यानी जूलॉजिस्ट और रोग विशेषज्ञों की मानें तो दुनियाभर में प्राकृतिक स्रोतों के विनाश ने मानवों के बीच उन बीमारियों को फैलाने का काम किया है जो कभी प्रकृति की गोद में छिपी रहती थीं। उल्लेखनीय है कि कोविड 19 का कारण बनने वाले वायरस जैसे वायरस चीन के हॉर्सशू चमगादड़ में पाए गए हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि हम भोजन, दवाओं या अन्य जरूरतों के लिए तेजी से जानवरों को मानवीय सभ्यता में इस्तेमाल करने लगे हैं। जब जानवर बाजारों में भेजे जाते हैं, तो इस बात की आशंका अधिक होती है कि कुछ वायरस जो उनके शरीर में हैं, वे अन्य जानवरों या मनुष्यों के बीच फैलेंगे। इसके कारण ही अतीत में स्वाइन फ्लू, बर्ड फ्लू और कई अन्य बीमारियां हुई हैं।

संभावित खतरे के मद्देनजर भारत में 22 मार्च को जनता कर्फ्यू लगाया गया, फिर 24 मार्च रात 12 बजे से देश भर में लॉकडाउन कर दिया गया। लेकिन, कोरोना को फैलने से रोकने के भारत के प्रयास की सफलता का एक बड़ा हिस्सा लोगों की जागरूकता पर निर्भर करेगा। हमें वायरस के सामुदायिक संचरण की दर को कम करना ही होगा। पश्चिमी देशों में रूस ने यूरोप के अन्य देशों की तुलना में कोरोना को नियंत्रित करने के लिए बेहतर रणनीति विकसित की है। रूस की अधिकतर सीमा चीन के साथ जुड़ी हुई है और जनवरी में वहां पहला मामला दर्ज किया गया था। रूस ने जनवरी में चीन के साथ अपनी सीमाओं को बंद कर दिया था और क्वारेंटाइन जोन की स्थापना की।

रूस ने बड़ी मात्रा में 1,56,000 से अधिक कोरोना वायरस से संदिग्ध मामलों का परीक्षण किया, जो भारत की अपेक्षा काफी अधिक है। भारत ने अपेक्षाकृत कुछ समय बाद यानी मार्च के दूसरे सप्ताह में यात्रा प्रतिबंध लगाने शुरू किए और मार्च की शुरुआत में क्वारेंटाइन जोन की स्थापना की। हवाई अड्डों पर निगरानी उसी समय शुरू हुई। सीमाओं को सील कर दिया गया और बहुतों के वीजा रद्द किए गए, लेकिन, तब तक आयातित वायरस स्थानीय आबादी में घुस चुका था।

18 मार्च तक स्थानीय रूप से प्रसारित मामलों का पहला सबूत आया, तभी भीलवाड़ा जैसे छोटे शहरों को लॉकडाउन किया गया। अब विशेष ध्यान देने की बात यह है कि अगले 10-15 दिनों में विभिन्न परिवारों द्वारा एक-दूसरे से किया गया पूर्ण आइसोलेशन, वायरस को खत्म करने में मदद करेगा। यदि पूरे देश में व्यक्ति स्वयं को परिवार तक सीमित कर लेता है तो यह एक घर के अंदर सीमित हो जाएगा, इससे इस वायरस के प्रजनन दर में भारी गिरावट होगी। यही कारण है कि 21 दिन के लॉकडाउन की सफलता बहुत-बहुत महत्त्वपूर्ण है।